IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उत्तराखण्ड की पहाड़ी ग्रामीण महिला के राजनीतिक विकास को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन

(व्यवहारवादी मनोविश्लेषण पर आधारित)

(राजनीतिक विकास उपागम)

डॉ0 बीना जोशी (असि0 प्रो0)

राजनीति विज्ञान, रा0महिला महाविद्यालय

हल्द्वानी (नैनीताल)

सारांश व प्राक्कथन

शोध लेख इस मान्यता पर आधारित है कि पर्वतीय महिलाओं के जीवन का इतिहास चुनौतीपूर्ण रहा है। पहाड़ी महिलाओं की चुनौती का विभिन्न दृष्टिकोण से विभिन्न सन्दर्भों में अध्ययन किया जा चुका है। भारत एक विकासशील देश होने के कारण राजनीतिक विकास उपागम गांव की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को विकास की संपूर्णता के संदर्भ में समझने में सहायक है, अध्ययन में महिला की समस्याओं को अलग–अलग दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है। पर्वतीय महिला के कष्टसाध्य, संघर्षशील जीवन, रीतिरिवाज व संस्कृति को संजोकर रखने वाली प्रवृत्ति के बाद भी उसका राजनीतिक विकास उस स्तर तक नही पहुंच पाया है। जिस स्तर तक पश्चिमी यूरोपीय देशों में स्विट्जरलैण्ड सरीखे पहाड़ी देश के गांवों की महिलाओं का राजनीतिक विकास हुआ है।

इस अंतर की समस्या का समाधान ढूढ़ने का प्रयास प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर किया गया है।

keywords-

सम्यो–	पहाड़ी धूप बनाने वाला पत्तीदार पौधा
रीठा–	सर्फ बनाने वाला
तिमूर –	प्राकृतिक दातून
किलमेड़ी–	पहाड़ी झाड़ीनुमा फलदार पौधा
हिसालू –	पहाड़ी झाड़ीनुमा फलदार पौधा
राजनीतिक विकास उपागम –	ल्यूसियन पाई का उपागम
जुरान तकनीक –	इजराइल

परिकल्पना (समस्या)

'शिक्षा' के प्रसार से राजनीतिक विकास बहुत अधिक प्रभावित होता है। महिलाओं को शिक्षित करने से उनमें राजनीतिक चेतना का उदय होता है तथा महिला अपने अधिकार तथा कर्तव्यों की जानाकरी प्राप्त करती है। इससे महिला की अभिरूचि में परिवर्तन होता हैं शिक्षा से महिला की राजनीतिक प्रक्रिया में सहभागिता बढ़ी है, राजनीतिक विकास के लक्ष्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है जबकि प्रयुक्त संसाधनों का प्रयोग अधिक क्षमता से हो। महिला का पहाड़ में कोई ऐसा राजनीतिक दल नहीं बना है जो उनका शासन में भागीदारी बढ़ा सके।

आर्थिक सम्पन्नता नही होने से राजनीतिक विकास में बॉधा आती है, पुत्री के जन्म पर गांव में उतनी खुशी नहीं होती है जितनी पुत्र के जन्म पर। वह स्वतंत्रता व समानता के अधिकार से जीवन पर वंचित रहती है। निर्णय निर्माण में महिला की कोई भूमिका नहीं होती है। मानव अधिकारों की जानकारी का अभाव है स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के पद पर बैठा अकुशल नेतृत्व उन्हें राजनीति से दूर रखता है।

पहाड़ी पर्वतीय महिला के राजनीतिक विकास को पर्यवेक्षाणात्मक विश्लेषण – (बघाण गांव के महिलाओं की तुलना स्विस गांव apple की महिलाओं से)

जन्म से 30 साल तक स्वयं भी इन चुनौतियों में शामिल होने के कारण गहरा अनुभव पहाड़ी महिलाओं के साथ रहा है, उनकी पीड़ा को ठीक से समझा है। स्विट्जरलैण्ड व उत्तराखण्ड की पहाड़ी महिलाओं की भौगोलिक परिस्थितियां काफी समान हैं दोनों देशों में पर्वतीय नदियों, झीलों के बाहुल्य से यातायात व संचार में काफी कठिनाई आती है फिर भी प्राकृतिक उद्योग जैसे जल विद्युत शक्ति की काफी गुन्जाईश बचती है। प्राकृतिक वातावरण व उंचे पर्वतों ने स्विस महिला को कर्मठ व संघर्षशील बनाया है। पहाड़ी महिलाऐं संघर्षशील कर्मठ तो है लेकिन स्विस पहाड़ी महिला की तरह स्वतंत्रता व अधिकारों के प्रति अत्यधिक उत्साही नहीं होती हैं।

पहाड़ी गांव

राज्य	जिला	गांव का नाम	परिवार	महिलाऐं	अशिक्षित	मजदूरी	विधवा
उत्तराखण्ड	अल्मोडा	तल्ला बघाण	25	30	15	14	09

स्विस गांव

देश	केन्टन	जिला नाम	परिवार	जनसंख्या	राजनीतिक दल	व्यवसाय
स्विटजरलैण्ड	Vaud	Morges Apples	223	1309	i. Green party ii. LP 5 party	Sports, Nursing Riding school

स्विस गांव साधनों की दृष्टि से गरीब है लेकिन निवासी महान व समृद्ध हैं। भारत के एक गांव की महिला की स्विस पर्वतीय गांव की तुलना करने पर स्पष्ट है कि भारतीय नेताओं की मनोवृत्ति उनका राजनीतिक विकास नहीं है। स्विस पर्वतीय महिला की गांव में ही ग्रीन पार्टी व एल0पी0एस0 पार्टी है जबकि भारत में ऐसा नहीं है कि महिलाओं ने पार्टी बनायी है।

प्रशासन की पहाड़ी महिलाओं के प्रति मनोवृत्ति – पहाड़ी गांव की महिला में जागरूकता की कमी है। सरकारी योजनाओं की जानाकरी देने की कोई पत्र–पत्रिका गांव तक नहीं पहुंचती है, ग्राम प्रधान उन्हें अंधकार में रखता है जबकि स्विस पहाड़ी महिला की तरह उनका अपना राजनीतिक संगठन नहीं हैं स्वभाविक है, कि कुशल नेतृत्व कहां से आएगा। पर्वतीय महिला अपने अधिकार, कर्तव्य, कानून, न्याय, मानवाधिकार की नहीं के बराबर जानकारी रखती हैं। परिणाम स्वरूप वह राजनीतिक व आर्थिक विकास की धारा में शामिल नही हो पाती। शिक्षा के अभाव के कारण वह परम्परागत जीवन से आधुनिक जीवन में नहीं आ पा रही हैं। ग्राम प्रधान की ओर से सस्ती सामग्री लगाकर रास्ते बनाये जाते हैं जो अधिकतर बारिश में बह जाते हैं। महिलाओं को बोझ सर में रखे इन टूटे रास्तों से चलने में कठिनाई होती है। सरकारी (आबकारी नीति) इन टूटे रास्तों से चलने में कठिनाई होती है। सरकारी (आबकारी नीति) का भी पहाड की महिला पर कुप्रभाव पड़ता हैं जिससे उत्पीड़न, हिंसा का माहौल बनता है।

पहाड़ी महिला का राजनीतिक विकास कैसे हो ? – समाधान सर्वप्रथम राजनीतिक व्यवस्था में परिर्वतन लाना होगा। राज्य सरकार द्वारा प्राकृतिक संसाधनों को ध्यान में रखकर स्विट्जरलैण्ड की तर्ज पर ऐसी नीतियां व योजनाए बनायी जाए जो विद्युत उत्पादक पर आधारित हो। पवन ऊर्जा व सौर ऊर्जा पर ध्यान केन्द्रित हो, छोटे–छोटे कुटीर उद्योग जैसे– रीठे से सर्फ, सम्यों नामक पौधे से धूप, तिमूर नामक पौधे से पेस्ट, तुलसी व गुलाब का अर्क, खाद पैकिंग, किलमोड़ी जड से शुगर नाशक पाउडर, प्राकृतिक रंग हल्दी पाउडर, खुमानी, पुलम, ऑडू, सेब आदि जैसे फलों से सूखे मेवे तैयार

करना जो पहाड़ी गांव में प्रचुर मात्रा में हैं, सम्बन्धित उद्यम को प्रोत्साहित कर उत्पादों का आधुनिक पैकिंग कर बाजार उपलब्ध कराया जाए। परिणाम स्वरूप राजनीतिक विकास होगा व पलायन भी रूकेगा। गांव के रास्तों को रोड में तब्दील कर आधुनिक तकनीक हेतु गांव की कुशल महिला को स्विट्जरलैण्ड में प्रशिक्षित किया जाये, वहां की राजनीतिक संस्थाओं व राजनीतिक सहभागिता के महत्व से अवगत कराया जाय। महिला डेरी परियोजना की जानकारी देकर दुग्ध व्यवसाय अपनाकर उनका आर्थिक विकास किया जा सकता है। राजनीतिक विकास के लिये गांव की महिला को समझना होगा कि वह शहर की महिला से किसी भी स्तर से कम नहीं वरन आगे हैं।

पहाड़ी महिला के जीवन में राजनीतिक शून्यता रहती है, राजनीतिक विकास दृष्टिकोण माध्यम से जिसके स्तर को आंका जा सकता है। राजनीतिक विकास अभिकरण के रूप में क्रांतिकारी महिला नेता, महिला राजनीतिक दल, राजनीतिक सहभागिता का विकास कर राजनीतिक विकास की व्यवस्था का सामान्वीकरण किया जा सकता है। इजराइल की जुरान तकनीक का प्रशिक्षण भी दिया जा सकता है।

उद्देश्य–

- पहाड़ी बाधाझा गांव में दो प्रतिशत महिलाओं का ही राजनीतिक विकास हुआ है, 98 प्रतिशत के विकास के लिये कारणों को खोजना।
- निर्णय– निर्माण में भागीदारी बढ़ाना तथा उनके प्रति हुए अन्याय का प्रतिकार करना।
- स्विस व उत्तराखण्ड की पहाड़ी, महिला के राजनीतिक विकस के अंतरों को खोजना।
- राजनीतिक विकास में बाधक – गांव का भूगोल, अकेलापन, पलायन, कुपोषण, जागरूकता का अभाव, समाचार पत्र–पत्रिकाओं का अभाव की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना।

अध्ययन पद्धति

राजनीतिक विकास की कमी का पूरा अनुभव होने के कारण, पहाड़ी महिला की मनः स्थिति का पूरा ज्ञान होने के कारण मनोविश्लेषणात्मक, व्यवहारवादी, तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। न्यासदर्श के रूप में गांव की स्थिति का मैंने खुद जाकर सर्वे किया, तटस्थता का निर्वाह करते हुये आधुनिक राजनीतिक विकास उपभोग का प्रयोग कर उनके संपूर्ण विकास सम्बन्धी समस्याओं का दूर करने का प्रयास है।

संदर्भ ग्रथ सूची

1. न्यू आस्पेक्ट्स ऑफ पोलिएकल डेवलपमें, ल्यूसियन पाई
2. समाचार पत्र– पत्रिकाऐं।
3. गांव बचाओं आन्दोलन के नेता ' अनिल प्रकाश जोशी के लेख'
4. Aljazeera.com से जुरान तकनीक
5. रामचन्द्र गुहा, उत्तराखण्ड क्यों नही बना हिमांचल, अमर उजाला 22 नवंम्बर 2015
6. नीति नियोजन समूह के सदस्य सचिव की मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड से बातचीत
7. प्रकृति सियासत नहीं करती – फ्रीडमैन
8. स्टेजेज आफ पालिटिकल डेवलपमेंट, आर्गेन्स्की
9. ग्रामसभा बधाण के दस्तावेज
10. T. Coding - The Federal Government of Switzerland
11. Hans Huber- How Switzerland is governed
12. Beyee, Modern democracies
13. Political Development Theory- Richard Higgott